बदायूं जनपद में माध्यमिक विद्यालयों के सामान्य पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों की व्यवसायिक क्षमता का अध्ययन

अमन कृष्ण
एम.एड., एम.जे.पी. रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

सरांश:
प्रस्तुत शोध में बदायूं जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सामान्य पाठ्यक्रमों में विद्यार्थियों में विभिन्न प्रकार से व्यवसायिक क्षमता पर शोध किया। इस अध्ययन हेतु बदायूं जनपद के अलग–अलग माध्यमिक विद्यालयों के 250 बालक–बालिकाओं को प्रतिदर्श के रूप में यादृच्छिक विधि का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष से ज्ञात हुआ कि लिंग एवं क्षेत्रीयता पर आधारित माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की व्यवसायिक क्षमता में सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ।

मूल शब्द: *माध्यमिक विद्यालय, सामान्य पाठ्यक्रम व्यवसायिक क्षमता*

1.प्रस्तावना

मानव जीवन का मूल आधार शिक्षा है। मानव का विकास शिक्षा पर ही निर्भर करता है। शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति का निर्माण करती है। शिक्षा बालक आचरण एवं मूल प्रवत्तियों का उचित मार्गदर्शन करके उसे परिपक्वा प्रदान करती है। उसके व्यवहार, आचरण तथा उसके क्रियाकलापों को समाजपयोगी बनाना है। पढ़ा लिखा ही मानव समाज को एक नयी दिशा प्रदान करता है। ज्ञान सामाजिक चेतना को जाग्रत करता है। भविष्य में आने वाली पर्दा को उसका हस्तानान्तरण करती है और उसका सतत विकास करती है शिक्षा समाज, राष्ट्र और सम्पूर्ण संसार के स्वस्थ दृष्टिकोण अपना सकें। शिक्षा संस्कृत के शब्द शिक्ष से बना है जिसका अर्थ ज्ञान प्राप्त करना है। शिक्षा शब्द का अनुरूप शब्द विद्या है जो संस्कृत के विद धातु से बना है और उसका भी तात्पर्य है जानना या ज्ञान प्राप्त करना। शिक्षा शास्त्रियों का विचार है कि एजुकेशन शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के एडुकेटम, एडूसीटर एवं एडूकेयर शब्द से हुई है। एडूकेटम शब ई एवं डूको दो शब्दों से मिलकर बना है। शिक्षा पाठ्यक्रम इसके नाम से ही प्रतीत हो रहा है कि मनुष्य की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये न्यूनतम पाठ्यक्रम ही शिक्षा है। इस पाठ्यक्रम के उद्देश्य से बालक के सामान्य गुणों का विकास हो सके। वह अपनी जीविकोपार्जन की दिशा में आगे बढ़ सके अपने चारों ओर के परिवेश से समायोजन कर सकें। पूर्व निर्धारित उद्देश्यों को सामने रखकर की गयी पढ़ाई लिखायी ही विशिष्ट अथवा व्यवसायिक शिक्षा है जैसे डॉक्टर बनने के लिये वकालत के लिये, इंजीनियर बनने के लिये तथा शिक्षा के लिये तैयार किया जाता है। इस पढ़ाई लिखाई के द्वारा ही समाज में कुशल प्रशिक्षक तैयार किये जाते हैं। जिसे व्यवसायिक अथवा विशिष्ट शिक्षा कहते हैं। इस शिक्षा के द्वारा बालक जीविकोत्पार्जन हेतु तैयार होता है और शिक्षित होकर देश के आर्थिक विकास में अपना अंशदान करता है परन्तु शिक्षा केवल व्यवसायिक योग्यताओं तक सीमित हो जाती है तो मनुष्य के सौन्दर्य पक्ष का विकास नहीं करती है। वह अपने में पूर्ण नहीं होती है।

2.अध्ययन का औचित्य

कक्षा 9–12 तक के विद्यार्थी किशोरावस्था के होते हैं। अपने भविष्य को सुखी और आत्म निर्भर बनाने के लिये वह अनेक प्रकार की कल्पनाएं करते हुये योजनाएं बनाते हैं। अपनी उन योजनाओं

को पूरा करने के लिये वह अपने गुरू मित्र तथा अपने अभिभावक से परामर्श के बाद उन योजनाओं को सुलझाने का प्रयास करता है। इस अवधि में बालक को अनेक समास्याओं का सामना करना पड़ता है। उपयुक्त विषयों को चुनना और स्वतः के अनुकूल विषयों को चुनना और व्यवसाय सम्बन्धी पाठ्यक्रम को चुनना सर्वाधिक महत्वपूर्ण और भविष्य की दिशा निर्धारित करने वाली जटिल समस्या है। शिक्षा प्राप्ति के उपरान्त व्यवसाय को चुनना जरूरी होता है। आजकल विषयों और व्यवसाय में प्रवेश हेतु यह आवश्यक होता है कि विद्यार्थी अपने को सोचने के बाद ही उसमें प्रवेश लें। कई प्रकार की समस्याओं का सामना आज छात्रों एवं शिक्षकों को करना पड़ रहा है। इन सभी कठिनाइयों का निस्तारण एवं निदान अत्यन्त आवश्यक है। अतः शोधकर्ता ने इसके सामाजिक और दूरगामी महत्वपूर्ण को देखते हुये अध्ययन हेतु प्रस्तावित विषय चयनित किया है।

3.समस्या कथन

बदायूं जनपद के माध्यमिक विद्यालयों के सामान्य पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों की व्यवसायिक क्षमता का अध्ययन।

4.तकनीकी शब्दों का अर्थ

1. माध्यमिक विद्यालय– माध्यमिक विद्यालयें का अर्थ उन स्कूलों से है जिसमें कक्षा 9–12 तक की कक्षाएं संचालित होती हैं।
2. सामन्य पाठ्यक्रम– सामान्य पाठ्यक्रम से अर्थ मूल पाठ्यक्रम से जिनके अन्तर्गत इतिहास भूगोल, अर्थशास्त्र, नागरिक शास्त्र जैसे विषयों का समावेश होता है।
3. व्यावसायिक पाठ्यक्रम– इस का अर्थ रोजगार परक विषयों का समावेष होता है।
4. विद्यार्थी– अध्ययन प्रस्तावित के अन्तर्गत विद्यार्थी जो कक्षा 9–12 में अध्ययनरत करने वाले छात्र एवं छात्राओं से है।

5.व्यवसायिक क्षमता

इसके अन्तर्गत मनुष्य वस्तुओं या क्रियाओं को चुनकर उसे नापसन्द तथा पसन्द के रूप में श्रेणीबद्व करता है। व्यवसायिक क्षमता किसी चीज से सम्बन्ध जोड़ने वाली मान की संरचना है जब बालकों तथा बालिकाओं का काम के प्रति मन लगता हे वह उनकी व्यवसायिक क्षमता है।

6.उद्देश्य

1.बदायूं जनपद के माध्यमिक विद्यालयों के सामान्य पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों की व्यवसायिक क्षमता का अध्ययन करना।
2.बदायूं जनपद के माध्यमिक विद्यालयों के सामान्य पाठ्यक्रमों के पुरूष एवं महिला विद्यार्थियों की व्यवसायिक क्षमता का अध्ययन करना।
3.बदायूं जनपद के माध्यमिक विद्यालयों के सामान्य पाठ्यक्रम के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यवसायिक क्षमता का अध्ययन करना।

7.परिकल्पनाएं

1.बदायूं जनपद के माध्यमिक विद्यालयों के सामान्य पाठ्यक्रमों की व्यवसायिक क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2.बदायूं जनपद के माध्यमिक विद्यालयों के सामान्य पाठ्यक्रमों की व्यवसायिक क्षमता में पुरूष एवं महिला विद्यार्थियों की व्यवसायिक क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3.बदायूं जनपद के माध्यमिक विद्यालयों के सामान्य पाठ्यक्रमों के व्यवसायिक क्षमता में शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यवसायिक क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

8.अध्ययन का परिसीमांकन

1. अध्ययन का क्षेत्र बदायूं जनपद के माध्यमिक विद्यालयों को ही रखा गया है।
2. प्रस्तुत अध्ययन में प्रतिदर्श का आकार 250 विद्यार्थियों तक ही सीमित है।
3. प्रस्तुत अध्यन को पूर्ण करने हेतु अध्ययन सामग्री का संकलन जनपद के स्थित पुस्तकालयों को रखा गया है।

9.सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

मिरियत बोल्क एवं ओलफ कोलर (2014) ने प्रतिभाशाली व उच्च उपलब्धि वाले किशोरों का निम्न बुद्विलाब्धि के संदर्भ में तुलनात्मक व उपलब्धि का रूचि पर पड़ने वाले असर का अध्ययन करना था व साथ ही वह भी जानना था कि समय बीतने के साथ साथ किशोरों की रूचियों में क्या परिवर्तन होते हैं। विपुल एवं सुशीला 2015 ने अबोहर तहसील के 10 वीं कक्षा के विद्यार्थियों की शैक्षिक क्षमता पर शोध किया। वर्तमान जांच के नमूने मे तहसील अबोहर के 10 वीं कक्षा के 100 छात्र शामिल थे। परिणामों से पता चला कि शैक्षिक में क्षमता में कोई महत्वपूर्ण अन्तर नहीं है।

खंडवाला 2017 ने अपने लिंग के संदर्भ में कक्षा 9–10 के शिक्षार्थियों की व्यवसायिक रूचि का अध्ययन पर कार्य किया है। सैंपल में कक्षा 9 वीं के 120 छात्र थे यानी 60 पुरूष और 60 महिलाएं। व्यवसायिक क्षमता को व्यवसायिक क्षमता सूची द्वारा मापा गया था। प्रदत्तों का विश्लेषण सांख्यिकीय विधि द्वारा किया गया है। निष्कर्षतः महिला छात्रों की तुलना में पुरूष छात्र व्यवसाय के उद्यमशील क्षेत्रों में अधिक रूचि रखते थे।

10.शोध कार्य की विधि

शोधकर्ता द्वारा सर्वेक्षण या वर्णनात्मक विधि का उपयोग किया।

11.अध्ययन की जनसंख्या

प्रस्तुत शोध के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश राज्य के जनपद बदायूं के समस्त माध्यमिक स्तर के विद्यालयों को जनसंख्या हेतु चुना है।
प्रतिदर्श– शोधकर्ता ने शोध के लिये प्रतिदर्श का आकार 250 विद्यार्थी निर्धारित किये।

12.अध्ययन हेतु प्रयुक्त उपकरण

शोध कार्य हेतु डॉ. एस.पी.कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित प्रमाणीकृत परीक्षण Vocational Interest Record (V.I.R.) का प्रयोग किया गया है। इस प्रश्नावली में कुल 200 प्रश्न हैं।

प्रयुक्त सॉख्यिकी प्रविधियां– प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध में परीक्षण हेतु आंकड़ों को सग्रहित किया तत्पश्चात इसका मध्यमान तथा मानक विचलन एवं टी अनुपान द्वारा मध्यमानों में विभिन्नता की सार्थकता की जांच की गयी है।

13.निश्कर्श

1. प्रथम परिकल्पना बदायूं जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों की व्यवसायिक क्षमता में अन्तर नहीं है कि सामान्य पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों का मध्यमान व्यवसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों के मध्यमान से कम है।
2. द्वितीय परिकल्पना– बदायूं जनपद के मध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य पाठ्यक्रम के पुरूष एवं महिला विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, से ज्ञात होता है कि सामान्य पाठ्यक्रम के पुरूष विद्यार्थियों का मध्यमान सामान्य पाठ्यक्रम का मध्यमान सामान्य

पाठ्यक्रम के महिला विद्यार्थियों के मध्यमान से कम है। कान्तिक अनुपात का प्रयोग करने से प्राप्त क्रान्तिक मान 1.26 प्राप्त हुआ जो सार्थकता सतर के 0.05 मान 1.98 से कम है। निष्कर्षतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। अर्थात 0.05 सार्थकता स्तर पर परिकल्पना बदायूं जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य पाठ्यक्रम के पुरूष एवं महिला विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

3. तृतीय परिकल्पना बदायूं जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत व्यवसायिक पाठ्यक्रम के पुरूष महिला विद्यार्थियों की व्यवसायिक क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, से दृष्टिगत होता है कि व्यवसायिक पाठ्यक्रम के महिला विद्यार्थियों के मध्यमान से कम है क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग करने से प्राप्त क्रान्तिक मान 0.26 प्राप्त हुआ जो सार्थकता स्तर के 0.05 के मान 1.98 से कम है। निष्कर्षतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। अर्थात 0.05 सार्थकता स्तर पर परिकल्पना स्वीकृत की जाती है अर्थात 0.05 सार्थकता स्तर पर परिकल्पना ब्दायूं जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत व्यवसायिक पाठ्यक्रम के पुरूष एवं महिला विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. चतुर्थ परिकल्पना बदायूं जनपद के माध्यमिक विद्यालयों के अध्ययनरत सामान्य पाठ्यक्रम के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। सामान्य पाठ्यक्रम के शहरी विद्यार्थियों का मध्यमान सामान्य पाठ्यक्रम के ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्यमान से अधिक है क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग करने से प्राप्त क्रान्तिक मान 0.43 प्राप्त हुआ जो सार्थकता स्तर के 0.05 के मान 1.98 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है अर्थात 0.05 सार्थकता स्तर पर परिकल्पना बदायूं जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य पाठ्यक्रम के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

14.सुझाव

1.प्रस्तुत अध्यन बदायूं जनपद के कक्षा 11–12 के विद्यार्थियों को लिया गया है जबकि आगे यह शोध राष्ट्रीय तथा राज्य स्तर पर किया जाना चाहिऐ।
2.प्रस्तुत अध्यन उत्तर प्रदेश के केन्द्रीय विश्वविद्यालय एवं राज्य विश्वविद्यालय के छात्रों पर भी किया जा सकता है।
3.प्रस्तुत अध्ययन बदायूं जनपद के बी.एड.एवं बी.टी.सी.प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापको को अपने व्यवसाय से सम्बन्धित पर भी किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. बुच, एम. बी. (1987). थार्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन नई दिल्ली, एन.सी.इ.आर.टी.।
2. बुच, एम. बी. (1988). फिपथ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन नई दिल्ली, एन.सी.इ.आर.टी.।
3. बुच, एम. बी. (1991). फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, नई दिल्ली, एन.सी.इ.आर.टी.।
4. पचौरी, गिरीश (2008). शिक्षा के दार्शनिक आधार, मेरठ, आर.लाल बुक डिपो।
5. सक्सेना, एन. आर. एवं मिश्रा, बी. क. (2008). अध्यापक शिक्षा मेरठ, आर. लाल बुक डिपो।
6. सक्सेना, एन.आर.स्वरूप एवं चतुर्वेदी शिखा (2009). उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक मेरठ आर. लाल बुक डिपो।
7. पाण्डेय रामशकल (2010). उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
8. भटनागर, सुरेश (2011). आधुनिक भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याऍ, मेरठ, आर. लाल बुक डिपो।
9. सिंह, अरूण कुमार (2012). मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियॉ, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली।

10. सिंह, ओ. पी. (2012). शिक्षा दर्शन एवं शिक्षा शास्त्री, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन।
11. गुप्ता, एस. पी. एवं गुप्ता अल्का (2013). भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएँ, इलाहाबाद शारदा पुस्तक भवन।
12. गुप्ता, एस. पी. (2013). आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, इलाहाबाद शारदा पुस्तक भवन।
13. त्यागी, एवं पाठक (2013). शिक्षा के सिद्वांत और शैक्षिक समाजशास्त्र, आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स।